**Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,**
***Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com***
*PEER REVIEWED JOURNAL, JUNE-JULY 2018, VOL- 6/28*

## शोध परिकल्प एवं अध्ययन विधि

**दलबीर सिंह सकलानी, Ph. D.**

*जवाहर नवोदय विद्यालय डूंगरी, जिला- हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश) 176045*

*Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com*

शोध के अभिकल्प से तात्पर्य है-सम्प्रत्ययात्मक संरचना या परिप्रेक्ष्य जिसके तहत पूरा का पूरा अनुसन्धान सम्पन्न होता है, उसकी दिशा तय हो जाती है तथा उसके परिणामों का मूल्यांकन किया जाता है। मौलिक तथा व्यवहारगत दोनों ही प्रकार के अनुसन्धानों के अन्तर्गत इस प्रकार का अभिकल्प पहले से निश्चित करना पड़ता है तथा इसका अनुपालन भी कठोरतापूर्वक करना परमावश्यक है। क्रियात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत अभिकल्प की अवधारणा को थोड़े लचीले परिप्रेक्ष्य में विकसित किया जाता है तथा जैसे-जैसे शोध सम्पन्न होता है, उसकी सरंचना में परिस्थितियों के अनुसार तबदीली लाई जा सकती है। जैसा कि स्टीफेन एम. कोरी ने कहा है, "क्रियात्मक अनुसन्धान का प्रारम्भिक अभिकल्प अनुल्लंघनीय नहीं होता है, व्यवहारिक परिस्थितियों में जैसे-जैसे अन्तरिम परिणामों की वैधता या अवैधता कायम होती जाती है, समस्या का परिभाषीकरण, परिकल्पनाएं जिनकी परीक्षा होनी हैं, तथा उन्हें परीक्षित करने की विधियों में सुधार करना पड़ता है। इस प्रक्रिया में नई परिकल्पनाएं तथा तथा विधियाँ उन परिस्थितियों के अनुकूल सुझाई जाती हैं।"[1] दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि क्रियात्मक अनुसन्धान ऐसा शोध नहीं है जिसमें किसी पूर्व रूपरेखा या योजना के प्रति अनावश्यक व्यामोह के साथ अध्ययन किया जाए।

सम्पूर्ण अध्ययन का व्यवस्थित प्रारूप तैयार करना अति आवश्यक होता है। यह प्रारूप सदैव शोध से समस्या की प्रकृति, उद्देश्यों एवं परिकल्पना के अनुरूप होता है। अनुसंधान के प्रारम्भिक स्तर पर बनाए गए इसी शोध प्रारूप को अनुसंधान का **अभिकल्प** कहते हैं। शोध अभिकल्प एक ऐसी रचना एवं रूपरेखा है जो न केवल अध्ययन को व्यवस्थित बनाकर उसे सही दिशा प्रदान करती है, बल्कि अध्ययन से सम्बन्धित विवादपूर्ण दशाओं पर नियन्त्रण लगाए रखने में भी सहायक सिद्ध होती है। जिस प्रकार एक विशाल भवन का निर्माण करने से पूर्व उसका व्यवस्थित प्रारूप तैयार करना आवश्यक होता है ठीक उसी प्रकार शोध कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व शोध अभिकल्प का निर्धारण करना भी आवश्यक होता है।

*Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

प्रसिद्ध विद्वान **लिलियाने गियारडीनो करलिंगर** ने **शोध अभिकल्प** को परिभाषित करते हुए लिखा है– "शोध अभिकल्प नियोजित अन्वेषण की एक ऐसी योजना, सरंचना व व्यूह रचना होती है जिसके आधार पर शोध प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जाते हैं और शोध क्षेत्र सीमा पर नियन्त्रण स्थापित किया जाता है।"[2] प्रस्तुत अध्ययन में शोध की सामान्य रूपरेखा, अध्ययन विधि, समग्र न्यादर्श और चयन, उपकरण एवं उनका विवरण तथा आंकड़ों के संकलन की प्रक्रिया, अंकन, आंकड़ों का सारणीयन एवं विश्लेषण के लिए उपयुक्त गणितीय एवं सांख्यिकीय विधियों के उपयोग आदि का वर्णन किया गया है।

यह अवश्य है कि तथ्यों के अभाव में कोई भी शोध सम्भव नहीं होता। तथ्यों में विचार, सिद्धान्त, स्थापना, मत और विचारधारा सम्मिलित किये जा सकते हैं। इन्हीं तथ्यों को अपने शोध के लिए शोधार्थी विवेचनीय वस्तु के रूप में प्राप्त करता है और इनके विवेचन और विश्लेषण द्वारा एक स्थापना (सत्य) अथवा निष्कर्ष तक पहुँचता है।

**शोध विधि**

परमपिता परमेश्वर की सर्वोच्च रचना मानव की प्रकृति खोजी, जिज्ञासु और किसी भी तथ्य को तर्क की कसौटी पर कसकर देखने की रही है। उसकी इस प्रवृति ने ही 'अनुसन्धान' या 'शोध' के लिए उसे प्रेरित किया है। मनुष्य की जिज्ञासा ही उसे नई–नई खोजों और आविष्कारों के लिए प्रेरित करती है। जिज्ञासा की प्रबलता के कारण ही मनुष्य दो विभिन्न विचारों, दो भिन्न बिन्दुओं और दो भिन्न दृष्टिकोणों के विवेचन की ओर बढ़ता है। शोध के समय अनेक बातें शोधार्थी को जाननी व समझनी पड़ती हैं। सर्वप्रथम शोधार्थी के लिए यह जानना आवश्यक होता है कि वह ज्ञान के जिस क्षेत्र में अथवा जिस बिन्दु को शोध में स्थान देना चाहता है उसके विषय में महत्वपूर्ण जानकारियां कहां से प्राप्त करे। इस प्रकार शोध का सम्बन्ध विषय का चयन और उससे सम्बन्धित सामग्री संकलित करने से होता है। इसके बाद सामग्री के वर्गीकरण और विश्लेषण के द्वारा शोधार्थी चुने गये विषय और शोध–प्रबन्ध की प्रस्तुति के मापदण्ड निश्चित करता है। इस पूरी प्रक्रिया में शोधार्थी का लक्ष्य एक ऐसे निष्कर्ष तक पहुँचना होता है जिसमें उस विषय पर किये गये कार्यो का तार्किक प्रस्तुतीकरण भी हो सके और शोधार्थी अपने विषय सम्बन्धी दृष्टिकोण का प्रकटीकरण भी कर सके। यह प्रकटीकरण ही शोधार्थी की शोधपरक मौलिक दृष्टि का प्रमाण होता है।

आज आधुनिक विज्ञान ने अनुसन्धान को शास्त्रीय आधार और तर्कपूर्ण स्वरूप दिया है। इसका कारण यह है कि आज के युग में ज्ञान–विज्ञान का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत हो गया है तथा

*Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

यह दार्शनिक निष्कर्षों अथवा दृष्टिकोणों के बाहर निकलकर कहीं अधिक यथार्थपरक और अधिक वैज्ञानिक बन चुका है। आधुनिक ज्ञान से जुड़े किसी भी शास्त्र या विज्ञान में प्रयुक्त अवधारणाओं का विशेष महत्व है। शोध चिन्तन में इस तरह की अनेक संकल्पनाएं मिलती हैं जिनका उपयोग करते हुए शोधार्थी अपने शोध को आदर्श स्वरूप प्रदान करता है।

अनुसन्धान शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द (Research) का हिन्दी रूपान्तर है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है- Re+Search जिसमें 'Re' से तात्पर्य बारम्बार तथा 'Search' का अर्थ 'खोजना' है। अतः 'अनुसन्धान' के अन्तर्गत किसी तथ्य को बार-बार सम्बन्धित प्रदत्तों के आधार पर देखने या खोजने का प्रयास किया जाता है एवं निष्कर्ष निकाला जाता है। मूल रूप से अनुसन्धान का अर्थ जाँच-पड़ताल (Enquiry) से रहा है किन्तु धीरे-धीरे इसका संशोधन और विकास होता गया।

'अनुसन्धान' शब्द मूलतः संस्कृत का शब्द है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार इस शब्द में 'अनु' उपसर्ग का प्रयोग है। 'अनु' का अर्थ है- "पीछे लगना, बाद में, पश्चात्, फलस्वरूप या क्रमानुसार। 'सन्धान' भी एक पृथक शब्द है जिसका प्रयोग हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत में भी होता है। हिन्दी में इसका प्रयोग 'एक निश्चित लक्ष्य' तक पहुँचने के अर्थ में होता है। लेकिन संस्कृत में इस शब्द के अर्थ में सूक्ष्म अन्तर है। संस्कृत में 'सन्धान' एक स्वतन्त्र शब्द नहीं है, इसमें 'सम्' उपसर्ग जुड़ा है। 'सम्' उपसर्ग का अर्थ 'सम्यक', 'पूर्ण', 'बहुत' तथा 'बिल्कुल' होता है। इसके साथ ''धा' (धारण करना) 'धातु' जुड़ी हुई है। इस प्रकार अनुसन्धान का संकल्पनात्मक अर्थ होता हैः अनु (क्रमानुसार) + सम् (सम्यक रूप से) + धान (धारण करना या विचार करना) अर्थात् अनुसन्धान से अभिप्राय हुआ 'किसी विषय पर क्रम से या सम्यक रूप से विचार करना'।"

विभिन्न विद्वानों ने अनुसन्धान को अपने-अपने तरीके से परिभाषित करने का प्रयास किया है। ये परिभाषाएं शोध को संक्षिप्त में परिभाषित करने का एक छोटा सा प्रयास है- एल. वी. रेडमैन (L.V.Redman) ने 'Encyclopedia of Social Science' में अनुसन्धान की परिभाषा इस प्रकार दी है- "अनुसन्धान नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक व्यवस्थित प्रयास है।"[3] (Research is a systematized effort to gain new knowledge).

पी. एम. कुक (P.M. Cook) के अनुसार, "किसी समस्या के सन्दर्भ में ईमानदारी, विस्तार तथा बुद्धिमानी से तथ्यों, उनके अर्थ तथा उपयोगिता की खोज करना ही अनुसन्धान

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है।"[4] (Research is an honest, exhaustive, intelligent searching for facts and their meanings or implication with reference to a given problem.)

डॉ. एम. वर्मा (Dr. M Verma) के मतानुसार, अनुसन्धान एक बौद्धिक प्रक्रिया है, जो नए ज्ञान को प्रकाश में लाती है अथवा पुरानी त्रुटियों एवं भ्रान्तधारणाओं का परिमार्जन करती हैं, तथा व्यवस्थित रूप से वर्तमान ज्ञान–कोष में वृद्धि करती है।"[5]

उपरोक्त परिभाषाओं के अवलोकन से ज्ञात होता है कि वास्तव में अनुसन्धान शिक्षा के स्वस्थ दर्शन पर आधारित है। यह सूझ तथा कल्पना पर आधारित है। इसमें अंतर–वैज्ञानिक (Inter-Disciplinary) पद्धति का प्रयोग होता है। अनुसन्धान एक उद्देश्यपूर्ण बौद्धिक प्रक्रिया है जिसमें किसी सैद्धान्तिक या व्यवहारिक समस्या के समाधान का प्रयास होता है और अनुसन्धान की समस्या सीमांकित (Delimited) होती है। इसके अन्तर्गत किसी नए सत्य की खोज, पुराने सत्यों पर नए ढंग से प्रस्तुतीकरण अथवा प्रदत्तों में व्याप्त नए सम्बन्धों का स्पष्टीकरण होता है।

प्रत्येक शोधकार्य को पूरा करने के लिए शोधविधि की आवश्यकता होती है। शोधविधि, अनुसंधान क्रिया को संचालित करने का एक उपकरण है जो समस्या की प्रकृति के द्वारा निर्धारित होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोध की प्रकृति वर्णनात्मक शोध प्रणाली से सम्बन्धित है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग ऐसी समस्याओं के अध्ययन हेतु किया जाता है जो वर्तमान परिस्थितियों से सम्बन्धित होती हैं। इस विधि को वर्णनात्मक विधि इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस विधि के द्वारा प्राप्त परिणाम स्थिति विशेष के बारे में वर्णन प्रस्तुत करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में शोध विधि के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा साथ ही साथ व्यष्टि अध्ययन विधि का प्रयोग करके विद्यालयों का अध्ययन एक इकाई के रूप में किया गया है।

**शोध समग्र**

अनुसन्धान के अन्तर्गत 'समग्र' शब्द परिभाषित सम्पूर्ण इकाइयों के लिए तथा प्रतिदर्श पद उस समग्र से चुने हुए लघु–समूह के लिए प्रयुक्त होता है।

शोध के अंतर्गत समग्र व्यक्तियों, वस्तुओं, संस्थाओं तथा घटनाओं के किसी ऐसे सुपरिभाषित समूह से सम्बन्धित हैं जिसमें उसके सभी सदस्य शामिल होते हैं। परिभाषित समस्त इकाईयों के समूह को समग्र कहा जाता है।

*Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में गोवा राज्य के सत्तरी तालुका के वालपोई कस्बे के सभी प्राथमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है जो सर्वशिक्षा अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत लाभान्वित हो रहे हैं।

**प्रतिदर्श**

शोध के लिए प्रतिदर्श का चयन अनिवार्य है। मानव के दैनिक जीवन में भी प्रतिदर्श का चयन प्रतिदिन देखने को मिलता है। अनुसन्धान एक ऐसा सन्दर्भ है जिसमें प्रतिदर्श प्रयोग से बचना सम्भव नहीं है। शोध में परिभाषित समस्त इकाइयों को 'समग्र' तथा उसमें चुने लघु अंश को प्रतिदर्श कहा जाता है। शोध के समग्रों में सजीव या निर्जीव कोई भी शामिल हो सकता है।

प्रतिदर्श किसी सम्बन्धित समग्र का एक लघु अंश होता है, जिसे किसी अध्ययन या शोध हेतु चुना जाता है। जॉन डब्ल्यू वेस्ट (John W. Vest) के शब्दों में–"एक प्रतिदर्श समग्र का अंश होता है जो कि समग्र से अवलोकन और विश्लेषण के उद्देश्य से चुना जाता है, प्रतिदर्श के गुणों का निरीक्षण करके कोई भी व्यक्ति समग्र के गुणों का अनुमान लगा सकता है।"[6]

शोधों की कुशलता व वैद्यता इस बात पर विशेष रूप से निर्भर करती है कि प्रतिनिधि प्रतिदर्श या चयन कितनी सावधानी के साथ किया गया है। किसी भी शोध के लिए प्रतिदर्श का चयन तीन तत्वों के आधार पर किया जाता है। ये तीन तत्व हैं– सदस्यों या इकाइयों का चुनना, सूचना या आधार सामग्री का एकत्रीकरण व संकलन करना, तथा निष्कर्ष या सामान्यीकरण निरूपित करना है। इन तीनों तत्वों को एक दूसरे से अलग–अलग रखकर समझना ठीक नहीं है। ये परस्पर सम्बन्धित हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। प्रतिदर्श चयन की धारणा का विशेष गुण या औचित्य मुख्य रूप से प्रयासों, समय एवं साधनों में मितव्ययता लाने एवं परम्परागत विधियों से अध्ययन किये जाने वाले जटिल एवं गूढ़ तत्वों को सरलीकृत रूप देने के परिप्रेक्ष्य में प्रदर्शित करना है।

डलेन ने ठीक ही कहा है, "कोई भी शोधकर्ता प्रतिदर्श चयन की विधियों तथा उनको उपयोग में लाने सम्बन्धी त्रुटियों से अपरिचित रहने की बात कदापि नहीं सोच सकता" [7]। प्रतिदर्श की पर्याप्तता का सम्बन्ध उसके आकार से है। पर्याप्तता के लिए समग्र के विजातीय होने की दशा में प्रतिदर्श का आकार बड़ा एवं सजातीय होने की स्थिति में प्रतिदर्श का आकार छोटा होना चाहिए।

*Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**प्रयुक्त उपकरण**

शोध अध्ययन या अनुसंधान में आधार सामग्री एकत्रित करने के लिए सम्बन्धित क्षेत्र से चुने हुए समग्र या प्रतिदर्श के माध्यम से जिन साधनों या प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें शोध के उपकरण कहा जाता है। ये शोध उपकरण पहले से उपलब्ध हो सकते हैं अथवा शोध की आवश्यकतानुसार इन्हें शोधकर्ता स्वयं निर्मित कर सकता है।

शोध के लिए निरीक्षण सूची का निर्माण करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। वस्तुतः इसका उद्देश्य संगत सूचनाओं एवं तथ्यों का पता लगाना है जो अपने आप में बड़ा दुष्कर है। शोधकर्ता अपने अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पना के आधार पर इसका निर्माण करता है जिससे शोधार्थी को अपने शोध के विषय के रूप में सतही व आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर शोधार्थी अपने शोध के तहत वांछित सूचनाओं को सूचीबद्ध करने के पश्चात् उन्हें विस्तारपूर्वक वर्णित करता है, जिससे उनकी प्रकृति, स्वरूप एवं स्त्रोत को लेकर कोई विवाद न खड़ा हो जाए। इसके अन्तर्गत शोधार्थी निरीक्षण व साक्षात्कार हेतु सूची में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रश्न, विशिष्ट एवं सामान्य प्रश्न, तथ्य एवं अभिमतसूचक प्रश्न, प्रश्न रूप बनाम कथन रूप व रूप नियत एवं अनुक्रिया–आश्रित प्रश्न सम्मिलित करता है जिनके लिए उत्तर अवलोकन, अनुभव, तथ्य, सम्वाद्, प्रत्यक्ष–स्पष्ट–बातचीत के आधार पर अंकित किए जाते हैं जो अध्ययन क्षेत्र से एकत्रित किए जाते हैं।

व्यक्तित्व के मूल्यांकन हेतु साक्षात्कार एक महत्वपूर्ण विधि है। शोध उपकरण के रूप में साक्षात्कार को व्यापक ढंग से परिभाषित करते हुए 'मूर' ने कहा है–"किसी उद्देश्य से किया जाने वाला वार्तालाप ही साक्षात्कार है।"[8]

साक्षात्कार ही वह प्रक्रिया है जिसमें वार्तालाप से पूर्व प्रश्नों की सूची तैयार कर ली जाती है और उत्तरदाता से औपचारिक या अनौपचारिक प्रसंगों में संगत सूचना के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है। साक्षात्कार के माध्यम से किसी समस्या या शोध समस्या या अन्य किसी विषय के बारे में आधार सामग्री प्राप्त करने हेतु आवश्यक साक्ष्य एकत्रित करना होता है।

शोध में व्यक्तिगत सम्वाद् बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसके माध्यम से समाज के वरिष्ठ व अनुभवी वर्ग से अतिरिक्त जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। बहुत बार यह भी देखा गया है कि उत्तरदाता ऐसे कई मुद्दों पर शोधार्थी से सम्वाद् कर लेता है जिसे शोधार्थी उस समय रिकॉर्ड नहीं कर रहा है। इस प्रकार के सम्वाद् किसी भी शोध को मौलिक रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

*Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**संदर्भ–ग्रन्थ–सूची**

*श्याम आनन्द, "शिक्षा शास्त्र" (आगरा, उपकार प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2011), पृष्ठ–313*

*श्याम आनन्द, "शिक्षा शास्त्र" (आगरा, उपकार प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2011), पृष्ठ–312*

*ट्रूमैन, "शिक्षा शास्त्र" (नई दिल्ली, दानिका प्रकाशक कम्पनी, प्रथम संस्करण–2010), पृष्ठ–272*

*ट्रूमैन, "शिक्षा शास्त्र" (नई दिल्ली, दानिका प्रकाशक कम्पनी, प्रथम संस्करण–2010), पृष्ठ–272*

*ट्रूमैन, "शिक्षा शास्त्र" (नई दिल्ली, दानिका प्रकाशक कम्पनी, प्रथम संस्करण–2010), पृष्ठ–272*

*श्याम आनन्द, "शिक्षा शास्त्र" (आगरा, उपकार प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2011), पृष्ठ–297*

*श्याम आनन्द, "शिक्षा शास्त्र" (आगरा, उपकार प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2011), पृष्ठ–326*

*श्याम आनन्द, "शिक्षा शास्त्र" (आगरा, उपकार प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2011), पृष्ठ–343*

*Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*